

DPN 6478

1. गायत्री-अष्टोत्तर सहस्र नाम स्तोत्र / GĀYATRĪ-AṢṬOTTARASAHASRANĀMASTOTRA
2. गायत्री कवच / GĀYATRĪ KAVACA
3. गायत्री पञ्जर स्तोत्र / GĀYATRĪ PAÑJARASTOTRA
4. शताक्षरी विद्या / ŚATAKṢARĪ VIDYĀ

Run. No. 7203

Cat. No. 212

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 19.5 x 9

Folios 35 Lines (in a page) 7/8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

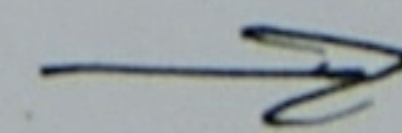
Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / Both side yellow

Beginning, colophon, post-colophon :

1. इति श्रीविष्णुयामले सृष्टिप्रशंसायं ब्रह्मविष्णुसंवादे गायत्र्याष्टोत्तरसहस्रनाम पंचपञ्चाशत्तमोऽऽ-
ध्यायः ॥
2. इति गायत्रीकवचं समाप्तं ॥



3. इति वाशिकसंहितायां चतुर्विंशतिसाहस्रिकायां वाशिकपराशरसंवादे
गायत्रीपञ्जरविभागयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥
4. अथास्यां शताक्षरी विद्या ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७२
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७२
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २७२

१ श्री ३ ग (६) भायनमः ॥ नात्र दृढवाचः ॥ ॥ रुगवन्सर्वधर्मरू सर्वभा
स्तुार्थयात्रगः ॥ ६ ॥ निस्सुनियत्राक्षनात्ररुस्यत्तन्मखाद्युतं ॥ १ ॥ सर्व
यायद्वैदव कनविद्यानिवर्तनः कनवावृक्षविज्ञानं किन्तुवाभावाः
साधनं ॥ २ ॥ वाक्कक्षनागतिः कन कनवाम्पयनागती उरि कामुषि
करुलं कनवायद्यसंरुवः ॥ ३ ॥ वकुमर्कसा (६) वक्ष सर्वन्नखित्तमाः
दिनः ॥ ॥ उक्तावाचः साधुसाधुमहाप्राज्ञः सम्यकयत्तुत्तयानयः ॥
॥ ४ ॥ ॥ ६ ॥ वक्षामियत्तन गभयणा यसरुसुका सुखाद्योविष्णुनाय

वृयदकं नदवीमिता ॥ ७ ॥ अक्षरुत्रमरुसुस्य अरुमवमवि ४ स्मृत
 शकृन्धानुयुतथाकवी गायत्रीकवतामृता ॥ ८ ॥ रुलावीजालिग
 स्योवस्यो ४ लोकयणीविना ४ अंगन्यामकवत्यासु मयनमाहका
 कत्रेश ॥ १ ॥ अथ ध्यानयव कामि साधकानीदितायवै ॥ वका (२४) गरि
 प्रस्थनीलधवलीक्ये मूर्खे ४ सुदी के ले र्यका विन्दु निवद्वतत्तमूकरी
 गत्वार्थवल्मीकिनी ॥ गायत्री कमलासनी कत्रकले २४ का वुयुग्मवहः
 यदादीववत्रमजवदधनीदिमाधिवृदीरुज ॥ ८ ॥ अर्चितालकामः
 न १५ ॐ विष्णो ०१

यका अर्यमायामवस्थवी ॥ अमृतात्तवमध्वस्वा अजितावायवाजि
 ना ॥ ९ ॥ अलिमादिगुल्लमवा अर्कमलुलसीसिना ॥ अऊवा अमवावः
 वा अरुसूत्रधवाववा ॥ १० ॥ अकावादिदकावाता अविषयुर्गुरु
 दिनी ॥ अऊनादियुगीका ॥ अऊनादिनिवासिनी ॥ ११ ॥ अदिनिस्थ
 जयाविद्या अविन्दुनि ४ कला अन्वदि सिताविद्या धंसिनीवाक
 वासिका ॥ १२ ॥ अजावाजमखावासा अविन्दुनिरानना अर्द्धमाया
 ध्यानका अविमलुलमदिनी ॥ १३ ॥ असूत्रधी अमावास्या अलक्ष्मी
 का

श्री अजार्थिता। आदित्ययादिना की आकृती अयता नता॥ १५ ॥
 आदित्ययदवीया आदित्ययत्रिमविता। आचार्यदरुना वा आ
 मुमूलनिवासिनी॥ १७ ॥ आरग्नयीयामवीया आवाष्मयासनस्थिता
 आध्वजनिताया आकाशमन्त्रवर्हिनी॥ १८ ॥ आश्विनसमा
 यका आद्यावाकाशवृथिनी। आदित्यमलुलगता अन्तुमाता विश्वविता
 ॥ १९ ॥ ॐ न्दिवायव्यदालिष्ठा ॐ न्दीवजनि रुद्रा ॐ वावनी ॐ युः
 यदा ॐ न्दादीयव्यवृथिनी॥ १६ ॥ ॐ द्वाकादलुसंयुक्ता ॐ धूम्रधाः

३३

नकात्रिणी। ॐ न्दनीलसमाकावा ॐ अर्थिगतवृथिनी॥ १९ ॥ ॐ न्दाः
 हीयव्यवीयवी ॐ वीयव्यवर्हिनी। उमायाया अष्टनिरा उवावृक
 रुलाहिनी॥ २० ॥ उड्युवावाडुमनी उड्वा अन्तुमक्षमा उध्वीया
 दुकणीवडुया अष्टवर्हिनी॥ २१ ॥ संधुववा संधुमनी सधिवनम
 सुता। सग्वकासल रुकुय सधिमलुलक्षत्रिणी॥ २२ ॥ सद्धिकासुमा
 र्गैष्ठा सधुधर्मा सधुयका। सग्वदनिलया सक्ती लूक धर्मयवर्हिनी
 ॥ २३ ॥ लूनात्रिवलसंरुता लूनात्रिवयकात्रिणी। उका दवी लक

३३ ३

माता न काने के कनिष्ठिका ॥ २४ ॥ न न्दी के बावना वृद्ध जेहि कामसि
 कय जा डका गी शावधी आषा उगैया न निधायिनी ॥ २५ ॥ डोघो ओष
 धसैयना डोयासन रुल्यका अलुमधुसि गाठवी अन कामसुत्र वा
 दिनी ॥ २६ ॥ कात्यायनी कालरात्री कामाक्षी कामसुन्दरी ॥ कमला
 कामिनी काना कामदा कालवैष्णवी ॥ २७ ॥ कविकैरुसनी कन्या क
 वी वसुवासिनी ॥ कल्याणी कुलवती कुवक्षुनिवासिनी ॥ २८ ॥ क
 वीन्दरलाका काली कुमालया कालिका कालाम्या का
 क २५

ना पाठे

लिका कालवृषिणी ॥ २९ ॥ कमनीयगुप्त कानि कलाधरा कुमुदनी ॥
 कोलिकी कमलाधरा कामावाचय रंजिनी ॥ ३० ॥ कीमात्री कवक्षुयि
 गी कुन्दरना कवियिणी कलिनी कलवनिता कदंबकुसुमयिणी ॥ ३१ ॥
 कालिन्दी कालिका काशी कलरुद्रवसुता काममाता कुसुमनी का
 मवृषाक्रियावती ॥ ३२ ॥ कुमात्री कुन्दनिलया किवाठी की ववाहना
 केकयी काकिला लाया कनकी कुसुमयिणी ॥ ३३ ॥ कमलुलधवा कु
 कर्मनिर्मूलकात्रिणी ॥ कलरुद्रगणि ४ कुकु कुरुकोरु कर्मगला ॥ ३४ ॥

॥ कस्तूरीनिलकाकसा कवीन्दुगमना कर्कश कर्णवलयना कक्षा कक्ष
 यिला कुरुवाद्या ॥ ३५ ॥ कूटस्मा कूधवा कंसा कक्षिस्मा खिलविष्टः
 या। खड्गकूटधवा खड्गो खड्गवी खगवा रुना ॥ ३६ ॥ खड्गो गक्षा विहीनः
 ख्याता खगवा आय विस्मिता। खगद्यी खीति नडवा खलुरया नित्यका
 यिनी ॥ ३७ ॥ खलुन्दुनिलका गंग गण्डा गुरुयुजिता गभयग्री गभसनी
 गीता गभन्धवी गभनला लूया ॥ ३८ ॥ रगभे रमी गभमिनी गीक्ष गन्धर्वा यमः
 प्रसविता रगभविन्दु च वलका ना गुणप्रय विरुविता ॥ ३९ ॥ गीधवी ग

लका

कवी रगभ गिबी गग रुना गमा गुरुवासा गुलवती गुव्या ययलाः
 णिनी ॥ ४० ॥ गुर्वी गुलवता गुष्का रगभयिका गुलका यिनी गिबिजा युः
 रुमार्तगी गवूठ धुजवल्गरा ॥ ४१ ॥ गर्वा यका विही रगभ रगभ कलस्य
 गदाधवा रगभ कर्षु निलया लका गुष्कमलवर्किनी ॥ ४२ ॥ यमर्षका यन
 का यक्ष यात्रका नवमर्दिनी चक्षिमनु यया याया यनमं यत्य कायिनी
 ॥ ४३ ॥ यक्ष प्रवयिया याही यक्षि संतुष्ट का विही याता विमलुला
 यक्ष यनायी यनवगिनी ॥ ४४ ॥ क्षानवा प्रमती चर्वा चर्चिणी यावू

नी

15
10
रुसिनी॥ वयला वल्लिका विजु विजु मा ल्या विरुषिना॥ ४५॥ वहु रुरुजाः
वा वृक्षाना वाहु वी वनिमयका वल्लिका विजु विष्मना वहु रुरु वरु
कनला॥ ४६॥ वनु रुसा वा वृगधी वका वी वनु रुसिनी॥ वल्लिका व
कक्षधी व या वा वा वी व वल्लिका॥ ४७॥ र्वचदा ग्मदिनी वनु वृज वाः
व विना सिनी॥ वा वृ वन्दन लिफांगी र्वचदा म व वी जिना॥ ४८॥ वा वृ म
म्मा वा वृ गति ल्यल्लिका वनु वृ यिनी॥ वा वृ रा ग पिया व यो व विना वः
कक्ष विनी॥ ४९॥ वनु मलु ल म क्ष स्का वनु मलु ल द र्ये ला व क वा

5
कस्तनी वरु विजु वा वनि वा सिनी॥ ५०॥ वि ल्व वृ या वनु मनी वनुः
रा वन्दन पिया॥ वा वृ यिनी वि वृ वृ वा वरु का व नो रु रु की॥ ५१॥ वृ वृ यीः
गा वृ वृ वृ वा वृ या वृ वृ य वि वृ वा वृ या वृ वृ वि वृ वृ वृ वृ वृ वृ वृ वृ वृ वृ वृ
म र्यिनी॥ ५२॥ वृ
वृ
वृ
दी य व नी आ स्ना जय नी जय ग्म लिनी॥ जि न ल्य या जि न का ध जि ना मिः

पु
पद्य २

गित्तिगि लानीवा निमितातासमादिनी ॥ ६६ ॥ गनुगनुविहाराय ह्ना गह
नमस्वप्रियिष्टया प्रिसं धप्रिस्नीताया तास्मितालयंयागिनी ॥ ६७ ॥
गाठंकिनी दुषात्रा रु दुकिनावलवासिनी ॥ गनुजालसमायका गात्रकाह
त्रावलियिया ॥ ६८ ॥ गिलकासयिया तीर्थ गमालकसुमाकृतिशतात्रकाः
प्रियत्रातन्वी प्रिर्गुंयप्रियाप्रिता ॥ ६९ ॥ गलाहप्रिमिला राना गाठंका
यप्रिहमकिता प्रिउठानेकिनी रुका प्रिविधमवृक्षकुनि ॥ ७० ॥ गयकाः
अनसंकाश गयका अनरुषहमा प्रियंवका प्रिवर्द्धि प्रिकातज्ञानदा

क३

नि ३

यिनी ॥ ७१ ॥ गय्यलरुकि करुका नामसीर्तुवयसुता ॥ गार्दस्काप्रियुलः
धवा गेरुंगीगनवल्लवी ॥ ७२ ॥ थंकात्रधप्रिणीथाना कारिनी दीनवः
सला ॥ जानवा नकवीदृग्ना दृग्नासुयप्रिवर्द्धिणी ॥ ७३ ॥ रुवकीरुवमाः
गात्र डोयदीर्दृरिस्वना ॥ रुवयानडवावासा रुविडकुकिनीदिवा ॥ ७४
॥ कामाहप्रिययादीका दंतिनी रुवयुजिता ॥ रुन्काविह्यनिलया रुवः
गादियाप्रियिणी ॥ ७५ ॥ रुववंधाविर्विषका दधिनी जानवा कृतिशदीना
नाथमुतादीका दिग्मसा रुवमारिणी ॥ ७६ ॥ धादीधनूर्द्धवाधनूर्द्धव

दिविधं २

15

10

5

0 cmts.

5

10

15

20

15
 10
 5
 0

ही धर्म वाचिणी॥ धूर्व ध्रुव ध्रुवा ध्रुवा धनका धनका धनका॥ ११॥ धर्म
 हीला धना धनका धनवर्धक विष्णु प्रजा धर्मि धन्या धर्मियका धर्म वाज
 यिया ध्रुवा॥ १२॥ ध्रुमावरी ध्रुम कशी धर्म हस्त सुवर्क नी नन्दा नन्द
 यियानि धी नन्दा नन्द नात्मिका॥ १३॥ नर्मका नलिनी नीला नील
 कल समालया नात्राय ययिया निर्या निर्मलानिर्गुण निधि॥ १४॥
 नित्रा ध्रुवा निधमयत्ना निर्य छुद्रा निर्वजना नाद्रविन्द कला नीला ना
 द्रविन्द कलात्मिका॥ १५॥ नात्र सिद्धी नग ध्रुवा नव्यो नाग रुषत्मा

विनयमा २

विमवा नि

नव ककुल गमनी नात्राय ययका रुवा॥ १६॥ नित्र वयानि नाका नात्र
 द्रियका विही नाना आनियका रया ना निधि का निर्मलानिर्गुण निधि॥ १७॥
 नव सुध ध्रुवा नीति नित्र ययका विही नन्दान नव प्रज्ञा नैमिषाः
 प्रस्थ वासिनी॥ १८॥ नव नीत यिया नात्री नील जीमूत निस्वना निमयाः
 घान जीव्या नील जीव नित्री स्वयी॥ १९॥ नामावली निर्मल गनी नागला
 कनि वासिनी नव जीव नद्रय रया नागला का धिद्रवता॥ २०॥ नयूत्रका
 रुच वल नव चिरु यमादिनी निमर्ष प्रक नयना निर्या ना समनिः

स्वना॥ ८०॥ नन्दनाद्याननिलयानिर्युक्तयत्रियाविनी॥ यार्वासीयमदा
 मोदायववकात्मिकायवा॥ ८१॥ यवकोऽविनिर्मकायवयातकः
 नासिनी॥ यत्रयिकुनिक्षानकायविकायवयुयिनी॥ ८२॥ यूर्तिमायव
 मायानि॥ यत्रनञायकविनी॥ यत्रादीयोवृषीयस्मायुवुवीकनिरुक्त
 हमा॥ ८३॥ यातालनलनिर्ममायुनायातिविनिर्दिनी॥ याविनीयनीकावा
 यललायाकलमनी॥ ८४॥ यजायनिविनिर्माकायवतननमलुलायः
 ययियायवसंकायवर्दीयवसंरुवा॥ ८५॥ यद्ययजायवयकायविनि

८३

८३

हीयियराविनी॥ यलुयालविनिर्मकायवस्थीयववमनी॥ ८६॥ यनि
 युतायविनीगीयववासयवायवमायवकलायववायववायात्रिजातमः
 मयिया॥ ८७॥ यजावनीमनायोडीयजयुतातयस्विनी॥ यदियालधवाः
 यकि॥ यिरुलाकयकायिनी॥ ८८॥ यत्रादीयवस्थीलावयुलनारिवि
 नासिनी॥ यद्यनजननीयकायितामरुयविग्रहा॥ ८९॥ यलुवीकयवा
 वासायलुवीकनिरुक्तना॥ यथर्द्धायायथुरुजायथयाकायथुरुवी॥
 ९०॥ यवातलमरायिगमदीयीनवासायिलिषयितायमवायुष्टिकाः

युल्लुयुनिष्ठायागमिशा॥१००॥यंचवल्गुयंचवल्गुयंचिकायंडवः
स्मितायत्रामायायत्राअमि यत्रायानियत्रागमिशा॥१०१॥यत्राकाष्टायः
कृष्णनीयावनीयावकशुमिशायय्यरुडयत्रावशायय्यवासावथयत्रा॥३
॥१००॥यीनीगीयीनवसनोयीनहायायिनाकिनीयीनक्रियायिनाचः
थ्रीयातलाकीयष्टुक्रिया॥१०१॥यंचरुडयियायात्रायूननायाकृष्णः
मिनीयन्नागवनमक्षस्कायुल्लुनीथनिधविना॥१०२॥यंचगंगयत्राः
शक्ति यत्रमाझाककाविनीयय्यकायस्मितायूषायायिनाखिलविष्णु

या॥१०३॥यानथियायंचगिखायन्नगमयत्रिभयिनीयंचसामात्मिकायः
थ्रीयावकीयथुकाकिली॥१०४॥यूबाहनायिमीमीसायाठलायय्यगीभिः
नीयूल्गुयजायत्राऊकायुल्लवाककगमयत्रा॥१०५॥यूवातरल्लरायूल्गु
ल्लयुल्लवायल्लयाधवीरुलिगारुल्लनीरुल्लु रूल्काबीरुल्लकाकमिशा
॥१०६॥रुलीमुल्लगल्लयनारुलिम सुल्लमलितावालावालावदुनूतावाः
ल्लनायनिरीष्टुका॥१०७॥वल्लरुडयियावकावडवावद्विमीसुतावन्कीक
वीवल्लमनीवाल्लिगथ्रीवल्लियिया॥१०८॥वान्धवीयाधितावद्विध्वं कः

कसमाकृतिशावालकानयराकावायाकीवाकलकवता॥ १०९॥ वरुः
 स्यतिनूतावृन्तावृन्तावनविद्यायली॥ वलाकिनीविमाराताविलवांसविह
 रैका॥ ११०॥ वदूनजवदुवैकावदुवकावदुधियावदुवाकयतावीजा
 प्रयितीवन्धुप्रयिती॥ १११॥ विन्दनाककलातीताविन्दनादस्यप्रयिती॥ व
 दगमधुलिगोलावदुयाष्टमवासिनी॥ ११२॥ वृन्तावकावृन्तस्कन्ध
 वृन्तीवालयामिनी॥ वृन्ताध्वकवदुसूतावदुजावदुविक्रमा॥ ११३॥ वद
 दूयद्यासनासीनाविल्ववृन्तलसिनावाधियमानिजावासावृद्धि

स्माविन्दुदर्येता॥ ११४॥ वालवालमसनवतीवृन्तानलवगिनी॥ वृन्तालु
 वदिवन्तस्त्वृन्तकंकलसुप्रिती॥ ११५॥ रुवानीरुयलवतीरुयली
 रुयवात्रिती॥ रुदकालीरुजगमकीरुवतीरुवतालुया॥ ११६॥ रुववीरु
 वनाकावावृन्तिरुगमालिनी॥ गामिनीरुगमिनीरुदकावृन्तिविक्र
 मा॥ ११७॥ रुतावासावृन्तसूताकागीरुवतावात्रितीरुगीवथीरुगव
 तीरुवनामीरुवगववा॥ ११८॥ गामिनीरुगिनीरुगयारुयितीरुविक्र
 दित्तारुगमसिकासीमवथीरुववन्तममनो॥ ११९॥ रुजनीयारुग

गनित्रता यादुक्षनरुयंकरी। प्रकिही प्रमही प्रामा प्रवनी प्रलू का कः
 निशा ॥ १३१ ॥ बोदी प्रुडयिया प्राका प्रामामाता प्रमियिया। प्राहिही प्राय
 का प्रीका प्रामा प्रादी प्रलाचना ॥ १३२ ॥ प्रागिनी प्रुयसंयना प्रत्तसिं
 रामनसिंता प्रकल्यास्य प्रधवा प्रके गन्धनलयना ॥ १३३ ॥ प्राजर्हं सः
 समा प्रुष्टा प्रेरुप्रिका वलियिया। प्रमही प्रुष्टा प्रधवा प्रुडिना खिले रत्न
 ला ॥ १३४ ॥ प्रुप्रवर्मय प्रीक्षना प्रुडिना प्रत्तमालिका। प्रागिनी प्रागहा
 मनी प्रागिही प्रामरुधिही ॥ १३५ ॥ प्रामचनु यजे कान्ता प्रवहा प्रुष्टका

मा ५

प्रिही। प्रकवसुय प्रीक्षना प्रकल्का प्रकहवत्ता ॥ १३६ ॥ लीका प्रिष्टवः
 गाला ला ललितालिङ्ग प्रिही। लकीली लालूय विषा लाकिनी ला कः
 विष्टता ॥ १३७ ॥ लका लीया प्रीष्टवी ललना ला क प्रिही। ववको वीकि
 ना विष्टा प्रेष्टवी विमला क निशा ॥ १३८ ॥ वा प्राहि वि प्रुष्टा वरु ववलकी
 विलासिनी। विनता प्रामम प्रुष्टा वा प्रिष्टा मनसिंता ॥ १३९ ॥ वा प्रिः
 ही प्रलू सै रत्ना प्रीतिरुजा वि प्रुयिही। वायुमलु लम प्रुष्टा विष्ट प्रुयाः
 विप्रिष्टिया ॥ १४० ॥ विष्ट प्रुय ली विष्ट मनी विष्टा ला की प्रुष्टा। प्रामरु

३१

वधियावस्मावदिलीवसूक्ष्मदिली॥ १४१॥ वदन्तवयवीनीगी वाजय
 रुतयकावासवीवामऊननी येकलनिलयाववा॥ १४२॥ वासंभुता
 धेर्मधवा वाल्मीकयविश्वविता इमकंरुवीलिवामना इमवका
 वलमगमिषा॥ १४३॥ इमताकवीहुरावावा हुंरासूत्रविकात्रिली॥ इम
 रावनीलिवकावा ईकवाइहावीत्रिली॥ १४४॥ इमलमहुयुजलासूत्र
 यु हावसंभनकात्रिली॥ हाववनीहावानन्या हावभूक्षास्त्राहुरान
 ना॥ १४५॥ हावराहूलिनीहृदा हाववीहुरकवारुनापीमनीपीधवन
 समावतीसनानदा ३००

गाहवलमनन्कात्रिली॥ १४६॥ हावोलीर्लव्वीहृदा यद्वागमयउधनिः
 कमायवावस्मितादवीयलमखयियकात्रिली॥ १४७॥ यउगेवृया
 सुमनीसूत्रासूत्रनमस्कता सवस्वनीसकाधवा सर्वमंगलकात्रिः
 ली॥ १४८॥ सामगमनयियासूत्र सावित्रीसामसंरुयो सर्ववासासकाः
 नन्कासूत्रनीसागवीववा॥ १४९॥ सर्वेव्ययोयुकासिद्धि साधविन्द्य
 ककर्मसर्वयवस्कासूत्ररि सूर्यमलुलमधगमा॥ १५०॥ सकात्रिः
 मलुलगता सामलुलवाहिनी सवयूसूर्यननया सूकलीसामहंसिः
 म१

नका १

नी॥ १७१॥ दिवसं वंशं विहीं दी का वरं सुवृथिनी॥ काम वरु यवी
धना दी वा विनन या दमा॥ १७२॥ गभयणी विवसा विणी युगमा मिमत्र
स्वती॥ वरु ग वी व वा वी ना व या मि य न ४ य न ४॥ १७३॥ यानि नामा
नित्ता क य गभयणा स्वमया किनी अक्षरु व स रु सं रु य ० न वीं दि ४
सका॥ १७४॥ उ य रु न रु म य डी क त्वा उ यी वि हा य न ४ य म क म न
व रु यी गभयणा व स रु सु कं॥ १७५॥ स रु का य सु नि व्या य व रु यी रु
सू वा य व॥ वं व रु स्य य व म गु र्क गु र्क न मा रु यि॥ १७६॥ य य रु

मय गु र्क द वि डा र्क ध न य रु॥ मा रु य रु म म रु र्क कामिनी सर्व कामः
रु॥ १७७॥ वा गभ रु म य न वा गभ द दाम य न व न ना रु व रु रु रु म य
यानं स्व र्क रु यी व यान व ४॥ १७८॥ गु व रु ल्य ग ना वी यि य ० ना म
य रु स रु रु वं व रु स्य म म ली म या र्क म वि स रु म॥ १७९॥ य ० ना
व रु सा य र्क यी व रु कि न र्क य ४॥ ॥ वं नि डी वि रु याम ल रु रु य
ही मा यी व रु वि रु सी वा रु गभयणा व रु व स रु सु ना म यी व यी वा रु रु
मा इ रु य ४॥ ॥ वी वी वी गभयणी य म न्ना रु ॥ ॥ वृ रु व रु रु रु रु ॥

१ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 यदीकवचमहामनुस्यवकाविष्ममरुह्यवामयय४अग्यह४सामस्य
 न्नीसियवैवकविद्यादविगमयणीकवेतावीडंरुर्ने४कि४धिय४कीः
 लकंनित्रवधिकविथैव्योस्वर्गद्वारवकलाकयाया/थजयविनिः
 योग॥ ॥ अर्लूक४कुल्लिकाकलां शुद्धनिर्मलकातिथी। सर्वतत्त्वमः
 यीवन्तुसावित्रीकवमानवी॥ गमयणीयवर्त४याहु सावित्रीयाहुककि
 (लावकविद्याहुमयस्य) हुहुत्रस्यांसत्रस्वती॥ यौवकीमदिर्भात्रक

त्यावककलत्रयिणी॥ याहुधनदिर्भात्रक याहुधनारुयंकवी॥ माः
 प्रतीमदिर्भात्रक न्मात्रतस्यनुयागिनी॥ किंलित्रोशामवहुम प्रदाहीः
 प्रदुत्रयिणी॥ दुद्वैवकासिकात्रक त्वधस्माद्वैववीतथा। चर्वमर्वणमी
 प्रक स्रवर्गीरुवनस्यवी॥ नत्यर्कयाहुमयाको जंयामसविहु४यर्कः
 वत्रस्यैकटिठानु रुग्मेनारिस्सुथेवच॥ कवस्यमरुकर्ययाहुधी
 मर्लीगलकगतशधियांमयाहुजिक्कापी य४याहुनययातिनी॥ ललाठ
 न४यक४याहु मूर्धानंमयुवाकयाहं नकैर्लीयाहुमूर्धानं संकात्र४या

10

5

0

cm.

5

10

15

20



23/12

10

5

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

0

cmts

5

10

15

20

[illegible]

नाशनं॥ मरुतीतिरु वीमर्षं मरुयोयविनाशनं॥ जयावंशवर्तं दीर्घं हृदयं
 जयानकवर्चय १०॥ मारुडा रु सुवडा रु डा रु यं खिलया न कं ४॥
 मरुतमवर्चयाय रु ४ यं वरुका धिगच्छु मि॥ रुववन्मानुषा रुत्वा रुन
 कि वरुले मरुवं॥ मरुमानि रुयं १० रुमार्गं मरुकि कामार्थसिद्धये॥ ॥
 ॥ वृत्तिगमयती कवचं समार्यं॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 रुगवर्कदवदववुक्का र्णीयममरुचिनी॥ विधातानं विग्धमृडीयद्वया
 निपुजायति॥ रुद्रसूटिकसंका ॥ मरुनुगिरवत्रायम ४ विद्रुत्तिग

डाटाहटसूटिकनककुल ४॥ गत्रचन्द्रा रुवदन ४ गत्रदिन्दीवन
 दृष्ट ४॥ रुनेमया विद्रुया दृ उयेवीता डिनावृता ४॥ मोकि कारा दृवस
 यरुणी ववसमन्विता ४॥ कर्पूना दृलिगन रुसूद्रनयनवर्द्धन ४॥ वि
 नयनायसंगम्य गिरसाय नियययाना वद ४ यत्रियेयेचुदवधिगता
 मरुग ४॥ ॥ नावदउवाच॥ रुगवर्चवदवग सवर्ककनूना निद्रु। ॥
 रुमिद्रुमियन्न रुगमा दृकमाधनी॥ रुग्धयदिर्गमयत्वा रुलदः
 दृगवडिर्गखरुहया दियायद्यु कामाद्विरुयायर्ह॥ यदेकी निष्कल

सूक्तं निरीतं नमनामयी यरु प्रियतमं लोकां नमवृद्धि यितामरु ॥
 ॥ वक्रा वाच ॥ षुष्टुना नदवर्द्धा मित्रवक्रमूलं सनागनं सुखादोम
 न्मुखकिर्कदवदवनविष्णुना ॥ प्रयंचवीतमिष्यादूत्रत्यलिक्किगिरु
 कीयूनामयाचकथिर्नकाग्नयायवधामन ॥ गभयतीर्यतं नमत्ररु
 सीनिगमप्रय ॥ अष्टादिकं चदिग्वर्द्धुसंगभवदसंक्रमात ॥ वारुनायू
 धर्मप्रामुख्यं नयूनं सर्वं साधुचरं वक्रमिन्वयिस्तुल्यना
 प्रदा ॥ वक्रनिष्ठा यदयं स्यान्नदयं यस्मकस्य विगु ॥ अचमनियतं ४ यः

अदात्मध्यानयूनं सर्वं ॥ ॐ द्रौ ॥ वृष्यादो विचिन्नाथ वामरुमाकुस
 स्कितां धर्मकीदनेगं ज्ञाननालेष्वयं समन्वितां ॥ वैराग्यकलुषासी
 नामांकात्रगुरुमधुगं वक्रवदिसमायुक्ता वेतनयूनमधुगं ॥ त
 त्वरुससमाकीर्णं गद्ययीयूषमास्कितां ॥ निर्विकल्पतत्रामूलनित्य
 सिंहासनस्कितां ॥ नादविन्दुकलानीतां ॥ गभयत्रयगभरितां ॥ निष्ठा
 निष्ठा मृगत्वादियाकात्रपरिसंवृतां ॥ निर्गलागलसीकिन्नागुहाद्वय
 कपाटकां चतुर्वर्गरुलायगां नित्यकर्मवनेयूनां ॥ सदसच्चित्तवृत्त्या

15
10
गान्ध्यां नरुस्येन वदाम्यहं॥ ॥ वक्रावाच ॥ वामकः ॥ लकासकम्
किरीटं नराडिगां मद्युक्तुं कटिलाकान विधिविष्णुनिवाननां॥ गुनु
रागविकर्षुकि सामसूर्याग्नि लोचनां ॥ उतायिं गलासुषमाखा वामना
सायुता निगी॥ संधादिता ॥ ययुटिगलसदा गुपतिद्विकां ॥ संधा सोयम
विष्टीवमनुदाद्रुसमनिगी॥ यउन्नददया सका विसाखा सुनमधुली
आका ॥ यद न विसुसुना रया वान न दगिकां॥ यउता यथाखा उद्यनी क
प्रीडा गति संज्ञिगी ॥ उनुमलय मनुखा ॥ ॥ रमानां स सिद्धयां ॥ सुखा सु

5
उद्रुक्क गिक वेध्वद वारखा संज्ञिगी ॥ अयन दय उं द्या रया कू नारखा यि नू सीरू
की ॥ अरुना न गार्द्ध मासा रया सूर्य चन्द्र समात्मिकां ॥ यादो धिन वेलामाखा
न गद्रु मली च्छिगी ॥ यद न गार्द्ध द वरि मृक विवेय संज्ञिगी ॥ तिथि मास
सूर्य दारखा संकेत निमिषात्मिकां ॥ माया कलियन वेचिगी संधा च्छादन मरु
गी ॥ कल कालानलय रया गति काटि समय री ॥ कटि सूर्य युगी काणी
गणिक कटि मूणी तली ॥ सुधा मंठल मक्ष्म सन्धान नन्द मित्तात्मिकां ॥ वग
नीतां मना गम्यां वदया वदमानां ॥ चनाच न मंयी नियां वक्रा द न सम नि

गी॥ ध्यात्वा स्वात्मविराट् नवब्रह्म नृपतिं त्रयमात्ररत्नं। यं तत्र स्यात्स विष्णुः सारं च
 न्दाविकृतिं नृचात॥ दवता च यत्राहं स ४ यत्रैव द्वाधिदवता। एतवावीज
 गकि ४ स्यादौ कीलकमूदादृगं॥ तत्तु धीमहि श्रुतं धिया रुपात्यत्रैयदं
 मनुमाया आतिवितिया निर्हसुमुखं ४॥ नृषद्वर्णं मूर्तिध्याने कवचीवा
 यकं मूना धर्मार्थकाममोक्षार्थं विनियोगं गतीं विन ४॥ यत्तु गदवतामं ग्रे
 त्रैगन्यासी समाचरत॥ त्रिधामूलं मनुदावाययत्सु समाहित ४॥ पूर्वैकदेव
 गी॥ ध्यात्वा काको गुहासंयुगीं यच्च वक्रादं गुरुतां प्रियं च नयने युगीं॥ यत्तु
 मूका विट् स सो वधुः सितनील पुरा ननी। वाही यत्रात्र माया मनी गवदने युगीं॥

गदवतामनु नृयाश्च वयवात्मिका। मृगं नृपययश्चिन्मृगं सारं सनक्ति
 गी॥ अर्द्धं नृवदं मूकं टकिरीटमधिकुलं। यत्तु नाटं कर्मां गत्य रुन ग्रेव
 यनृयुनां॥ अंगुलीयकं कयूत्रं कटकाश्चोर्लं कर्णं दिव्यं सग्वं मुसीकिनीं च
 विमलं लमधुगं। वयारुयाकुयुगलं रवचक्रयागां कुं ४॥ गूलं कयालं
 मगुर्दं वरुनी मधुनात्मिका। मयुर्गं विनयां दवी सावित्री विदमाने वी॥ अ
 दिव्यं यथगमिनीं यत्र वक्रं सवृयिणीं विजिह्वं मृगं तननीं सयद्विद्यां सन
 खनीं॥ प्रियदां सगमयीं पूर्वमुखीं वक्रां मुसीकिनीं चतुर्विंशतिं तत्वाद्यापणु

प्राचीदिगीमम॥ चतुष्टयदायातुवद्वदंताद्यादक्षिणा॥ नना॥ षड्विंश॥ रुक्मयू
 कासायातुमदक्षिणीदिगी॥ पुण्यद्वारेवीयंचयदीयंचाण॥ रुक्मयूयिणी॥ या
 नुयतीचीमहिगीसामवद्वनिर्वाकिना॥ सोम्यास्यावद्वनूयाख्यासासर्वागी
 वसामिका॥ उदीच्याषट्पदायातुचतुष्टयष्टिकलामिका॥ यंचाणद्व
 दुर्जचितानवयादादगाक्षेत्री॥ वामास्यायातुमचाद्धगीषवदानकसीस्त्रिणा
 विअनिरावद्वसंधामगातूटाचतुरुजो॥ वायव्यचर्मसिधनायातुमयाव
 कीदिगी॥ वाक्कीक्रमावीगायतीनकीगीरुसवारुना॥ विरुक्तमष्टुत्वदस

शूल २
 कूमुकूमुवोयातुनेसनी॥ शुक्रवर्धुचमाविधीयूवतीवृषवारुना॥ कयाध
 लंमद्वसकक्षविधीयातुवायवी॥ ग्रामासनस्वतीवृद्धावेष्कवीगनूठासना
 ॥ गीखायकुंरुयकना यातुगेवीदिगीमम॥ चतुरुजोवदमातीगेवी
 गीसिरुवारुना॥ वनारुयाकुयूगलारुजोयात्वधर्मादिगी॥ तरुत्याष्वस्त्रि
 गास्वस्ववारुनायूधरुषणा॥ स्वस्वदिद्वस्त्रिणा॥ यीरुगट्ठरुयंकुंगीसीयूगा॥
 मनुषिधवतानूयंमूदाधिष्ठानदवगा॥ व्यापकस्वनयास्त्रिस्मादायादत
 लमरुकी॥ गत्यदीमगिन॥ ययातु॥ रालंमसविनु॥ यदं॥ वप्रद्यमिद्वेणीयातु

शुनिर्गुग ४ सदा मम ॥ द्वाही दवस्य भयातु यातु धीमहि ममूर्ख ॥ जिह्मि
 मधिय ४ यातु कर्ण भयातु य ४ यदीन ४ यदी यातु मस्क (स्त्री) रुओ यातु यचा
 दयात् ॥ कपोतु मत्र स ४ यातु वक्षामत्रा उमी सदा ॥ अमी मद्दयं यातु म
 ममधम मथावतु ॥ उमाना रिं सदा यातु कटि पावतु मसदा ॥ अरु वा सध
 किनी यातु पुद्गी आति ४ सदा मम ॥ उरु ममत्र स ४ यातु जानूनी अमूर्त मम
 उधव द्वा यदी यातु गुल्मी रू ४ यातु मसदा ॥ यादो मम रुव ४ यातु स्व ४ यातु त्वसि
 लवयू ४ नामा हिम मरु ४ यातु नाम कूय ममजन ४ ॥ द्वाही ध्यातु तत्त्वानि ४

द्विग ४ यातु ममय ४ सत्यं यातु ममायूषिर्ह सावृद्धि तु यातु म ॥ शुचिष त्यातु म
 विद्या धन काण्वि सु ४ सदा ॥ यातु तनिद सत्सी ज्ञान हाता भयातु धातु ४ ॥ अ
 गदी वदित्यातु अतिथि ४ यातु मगृही ॥ धर्मदू ४ ॥ सत्यातु नृषदर्थ च यातु म
 ॥ वत्र सत्यातु मयौ ४ ॥ अत सत्यातु मसू गान् मवाम सत्यातु मवीधून् शारुन
 द्वाष्ट यातु म ॥ ७ ॥ उं धमय नू न्यातु मत जा यातु मरुव ४ ॥ अदि जा यातु मदे
 वी सर्व स्यातु ममती ॥ वद्विमा नू तसामा कयू नू था ४ सदा मम ॥ अनुक मयि
 यत्कानं गत्री नाक वदित्यातु ॥ तत्सर्व यातु मनिर्ही स ४ साह मरु निर्णी

ॐ दत्त कथितं सम्यग्गत्या खिन्नयं जयं ॥ संध्या ४ यय दत्तका जय कालः
 विष्णोषण ४ धनय दित्तवययि भवय दत्तसमाहित ४ ॥ सविष्णु ४ सगित ४ ५
 सार्हससंसाटसविनाटसनाट ४ गताद्वयमहादद्या नामोष्टा विंगति ४ ग
 ती ४ गृहवक्त्रा मित्तसर्व मिनिगुर्कसनागनं ४ रुमिर्वगुवनावाही सुधव
 सूमनामही ॥ रुमिणी जननी नंदासविसर्ग गयस्विनी ॥ ययस्विनी मणी
 र्याणी वेन्दवी चिन्मयी समा ॥ विष्णुयुया विष्णुवनिर्मुनी यमूनी रु
 वो ॥ १ ॥ दादवी वविष्ठाच ॥ किनिधिमतिहिमा ॥ धियद ॥ यागिनीय

क्रीनदीयुक्ताचवाधिनी ॥ दयाचयामिनी यदात्राहिणी नमही जय
 ॥ सनामुखी साममयी वक्त्रलादाषवर्जिगा ॥ मायायाक्लीयमादाश्वीम
 निनी ॥ १ ॥ विधी क्रिया ॥ आत्मागी र्थमयी नम्या सामामय्युजया गथा ॥
 वाक्की रुमी रुर्कुडगी वणिनी सुन्दरी वनी ॥ ३ ॥ कायाहं सिनी सर्वा
 वर्कही यजुदावनी ॥ वंआसूधनमानती नियुद्धी दक्षि कासनी ॥ रुम
 गानावगवनी विनतद्वी यजानना ॥ अमनागी र्थदाणी चदुद्धयि ग
 हाविनी ॥ नातिसाष्टायसं सद्युद्धावदिही वही ॥ सदसद्विस्तलासह

यच॥ उड्यं गंच ह्युकि त्रहाम्यस्माय कृतां जलिः ॥ तुलणी काननमनिष्ठना
 सीनावाजयदिदी॥ सर्वकामानवाप्नोति नथेव गिवसनिधौ ममयी
 निकत्रं दिवा विष्णुराकियवर्द्धनी॥ द्वात्रांशं कृष्णं ॥ अहमाजयत्कुष्ठिर्न
 तथा ॥ अंगमंगीयथा लिङ्गं कवचननुसाधकः ॥ मण्डलनविशुद्धगसर्व
 शोभेन्नर्गस्य ॥ मृगयता च यानात्री जन्मवर्धनं ध्यायन्नेव च॥ कन्यादिव
 ध्यानात्रीर्धातासामंगीयमाजयन् ॥ युगानत्रागिनस्कास्का नृणां दीर्घ
 जीविनः ॥ तांस्मान्मन्त्रेणादवर्क्रेरुर्ध्वं ध्यायन् नक्षयति विद्वेषिणीः

याम्ना अंगमस्या ॥ यमाजयन् ॥ नमवरुजगसास्त्रीयनिकामवर्धनात्
 अश्वत्थवाजवर्धनी ॥ जलमग्नः ॥ स्वयं यराक् ॥ यालागमूलविद्याथी
 नडासारिमुखत्रवः ॥ कन्यार्थचष्टिका ॥ गह्वरं गह्वरं पुद्गयाय च॥ श्रीः
 कामाविष्णुगह्वरुडयानमृतीवर्गं रावन् ॥ अत्राग्याथीस्त्रिगह्वरचमाक
 र्थी ॥ जलमसृक् ॥ किमनुवदन् न किं नष्टं नानावदन् त्वत् ॥ ययं काममंरि
 ध्यायन् नृणां प्राप्ताय संशयः ॥ ॥ नृनिवगिष्टमं हितायै चतुर्विंशति सारु
 मिकायां वगिष्टयत्रागं न संवादगयतीयं जत्र विरागया ॥ नामयः ॥ आयः ॥

ॐ नमः सहस्रं यजमाये ॥ ॥ अथ स्यात्तादृशी विद्या ॥ ॥ य
 थमस्य फलं वा ॥ ॥ ॐ स्वः ॥ ॥ सहस्रं नमः सत्यं ॥ ॥ न
 सविंशतिं नमः ॥ ॥ ॐ देवस्य धीमहि धियो यान नः प्रचोदया
 न् ॥ ॥ यथा कुरु सा मदां ॥ ॥ आया आति न सा मृगं वृक्षं रत्नं वः ॥ ॥
 वः ॥ ॐ हं सत्यं विषं वसु नमः ॥ ॥ त्रिंशत् सत् ॥ ॥ हीना वदिषं
 ॥ ॥ अतिनालं सत् ॥ ॥ नृषं वनं सत् ॥ ॥ अतः सत् ॥ ॥ व्यामसत् ॥ ॥ अं ॥ ॥ अका
 ॥ ॥ गमजा मन्त्रा अदिजा मन्त्रं वरुणं हंसः साह ॥ ॥ १०० वरुणा ॥

यद्येकं ॥ ॥ महाविद्यानां मन्त्रं मिदं वरुणः ॥ ॥ यथा मन्त्रो विष्णोः मन्त्रोऽथ भद्रं कर्णेभिः शृणुयान् मन्त्रं ब्रह्म विद्वान् ॥ ॥

15

10

5

0 cmts.

5

10

15

20

15

10

5

0 cmts.

5

10

15

20

15

10

5

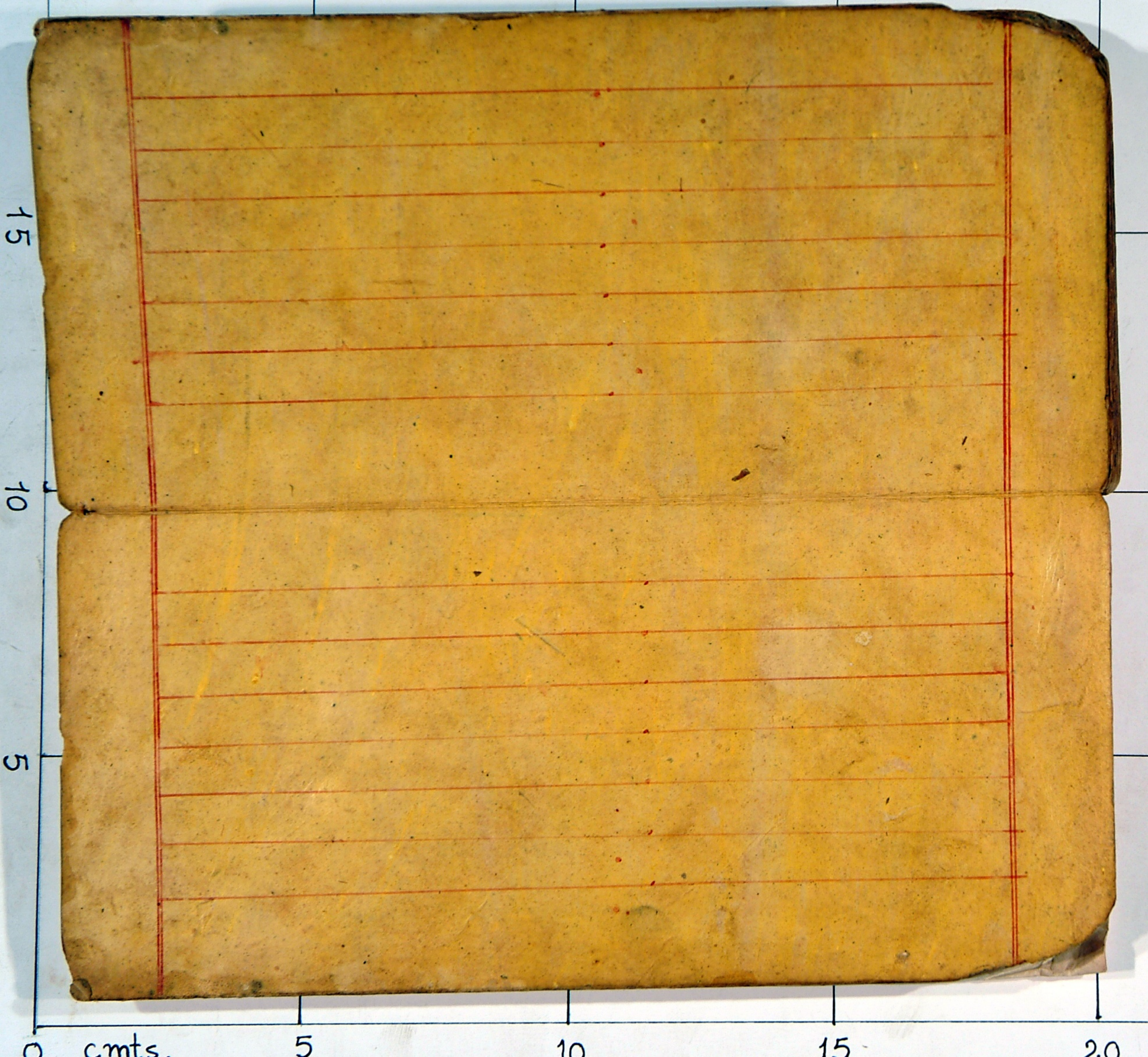
0 cmts.

5

10

15

20



15

10

5

0 cmts.

5

10

15

20